



## भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

श्री गंगानगर राजमार्ग, बीछवाल, बीकानेर-334 006 (राज)

ICAR- CENTRAL INSTITUTE FOR ARID HORTICULTURE

Sri Ganganagar Highway, Beechwal- BIKANER-334006

e-mail- ciah@nic.in www.ciah.icar.gov.in. Phone-0151-2250960 : Fax-2250145



31-03-2019

### शुष्क बागवानी फसलों हेतु किसानों के लिए सलाह

- मौसम में बदलाव के कारण, उत्तर भारत के राज्य यथा-राजस्थान, पंजाब एवं हरियाणा राज्यों में खजूर में पुष्पन देरी से हुआ जिसके चलते परागण का कार्य अभी भी जारी है अतः किसानों को खजूर में उपयुक्त नर के परागकण लेकर नियमित रूप से परागण करने की सलाह दी जाती है। यह कार्य गुजरात राज्य में पहले ही पूर्ण हो चुका है।
- इस समय तापमान एवं आर्द्रता के अत्यधिक उतार चढ़ाव के कारण अनार की फसल पर एफिड कीट का प्रकोप बहुत ज्यादा हो रहा है। यह कीट पत्तियों तथा फूलों से रस चूसता है जिसके कारण पत्तियों पर शहद जैसा पदार्थ दिखाई देता है जिससे पोधों की बढ़वार कम हो जाती है। इसके नियंत्रण के लिए ईमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस.एल.) का 0.4 से 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से साफ मौसम होने पर छिडकाव करना चाहिए।
- शुष्क क्षेत्रों में मुख्यतय काचरी, काकड़िया, तरबूज, खरबूजा, तरककड़ी, तोरई, लोकी इत्यादी की खेती इस समय बहुतायत से की जा रही है। इन फसलों में मौसम में बदलाव के कारण इस समय मोजेक रोग आने की अधिक सम्भावना है जो एफिड के द्वारा फैलता है। मोजेक रोग से प्रभावित पेड़ की पत्तिया छोटी एवं बढ़वार कम हो जाती है। इसके नियंत्रण करने के लिए ईमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस.एल.) का 0.4 से 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर का छिडकाव करना चाहिए।
- इस समय जिन कददूर्गीय सब्जियों में फल बनना शुरू हो गये हैं, उनमें मौसम में बदलाव के कारण फल मक्खी के प्रकोप की सम्भावना ज्यादा रहती है। इसके नियंत्रण करने के लिए समेकित किट प्रबंधन के लिए ग्रसित फलों को तोड़कर जमीन में दबाना चाहिए, खेत में 8-10 क्यूलूर प्रति हक्टेयर फूल आने से पहले लगाना चाहिये। यदि फल मक्खी का प्रकोप बहुत ज्यादा हो तो डाईमैथोपेट (30 ई सी) 1.5-2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर या स्पीनोसैड (45 एस सी) का 0.4-0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से खुले मौसम में छिडकाव करना चाहिए।
- बरसात के बाद मौसम के खुलने पर कददूर्गीय सब्जियों की बेलें विल्ट रोग के कारण अचानक सूखने लगती है। इसकी रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम (50 % डब्लू पी) का 1.0 ग्राम प्रति लीटर पानी के हिसाब से ड्रैचिंग करना चाहिए।

### **Farmers Advisory in Arid Horticultural Crops**

- In Northern states of India like Rajasthan, Punjab and Haryana pollination of date palm is delayed and still continued due to fluctuation in weather conditions. Therefore, date palm growers are advised to perform pollination regularly using pollen from appropriate male palms. However in general, the pollination work in Gujarat state is performed somewhat early owing to early flowering.
- In pomegranate, owing to fluctuating temperature and relative humidity the incidence of aphid is very high. Aphids suck the cell sap from newly grown leaves and flowers which secretes honey dew like substance and ultimately reduced plant growth. For management of aphid spray of imidacloprid (17.8 SL) @ 0.4-0.5 ml/l of water should be done during open weather.
- In arid regions, vegetable like Kachri, snapmelon, watermelon, muskmelon, long-melon, ridgegourd and bottlegourd etc. are mainly grown. These crops are severely affected by mosaic disease due changing weather conditions which is transmitted by aphids. The affected plant become stunted and leaves size is reduced. Spray of imidacloprid (17.8 SL) @ 0.4-0.5 ml/l of water should be done for management of aphid vector.
- The possibility of fruit fly infestation is very high in those cucurbits where fruit setting already started due to changing weather. For integrated management of fruit fly, affected fruits should be collected, buried in soil and 8-10 cue-lure traps should be installed prior to flowering. If the attack of fruit fly is severe, spray of dimethoate (30 EC) @ 1.5-2.0 ml/l or spinosad (45 SC) @ 0.4-0.5 ml/l of water should be done during clear sky.
- In arid region, the vines of cucurbits may suddenly start to die after rain due to wilt disease, which can be managed by drenching of carbedazim (50 % WP) @ 1.0 g/l of water.